B.A- I (Hons) Paper-1-Topic-"प्रतीत्यसमुत्पाद सिद्धान्त" The theory of Dependent origination

Paper- Ist

4. Q: बुद्ध के द्वितीय आर्य सत्य की व्याख्या करें।

बुद्ध के अनुसार दुःख के कारणों की व्याख्या करें।

Explain fully the Causes of Suffering to Buddha.

Ans:→ भारतीय दर्शन की परम्परा को कायम रखते हुए बुद्ध ने भी दुःखों के कारणों को जानने का प्रयास किया है। प्रत्येक कार्य या घटना का कोई-न-कोई कारण अवश्य होता है अर्थात् अकारण कोई भी घटना नहीं घटती। दुख भी एक घटना या कार्य है, इसलिए इसका भी कोई कारण अवश्य होना चाहिए। बुद्ध ने दुख के कारण का विश्लेषण द्वितीय आर्य सत्य में एक सिद्धान्त के द्वारा किया है जिसे प्रतीत्यसमुत्पाद (theory of Dependent Origination) कहा जाता है। प्रतीत्यसमुत्पाद दो शब्दों - 'प्रतीत्य' और 'समुत्पाद' के योग से बना है। 'प्रतीत्य' का अर्थ है, किसी वस्तु के उपस्थित होने पर 'समुत्पाद' का अर्थ किसी अन्य वस्तु की उत्पत्ति। अर्थात् - 'प्रतीत्यसमुत्पाद' का शाब्दिक अर्थ है - किसी एक वस्तु के उपस्थित होने पर किसी अन्य वस्तु की उपस्थिति यह सिद्धान्त बुद्ध के सभी उपदेशों का आधार है। इन्होंने अपने प्रथम आर्य सत्य में 'दुःख' है की व्याख्या की है तथा द्वितीय आर्यसत्य में दुःख के कारण की विवेचना की है तथा तृतीय आर्य सत्य में 'निर्वाण' की व्याख्या की है। तथा चतुर्थ आर्य सत्य में निर्वाण प्राप्ति का मार्ग बतलाया है। इसतरह से बुद्ध ने दुःख और दुःख से छुटकारा पाने के लिए उपाय भी बताया है। वस्तुतः सुख और दुःख से छुटकारा दोनों एक ही वास्तविकता के पहलू है। माध्यमिककारिका में कहा गया है - "Pratitya Samutpada viewed from the point of view of relativity, is Sansar while viewed from the point of view of reality. It is Nirvana."

'प्रतीत्यसमुत्पाद' हमें बताता है कि संसार की सभी वस्तुएँ एक-दूसरे से संबंधित है। एक-दूसरे पर आश्रित है, तथा जन्म मृत्यु के विषय है। अर्थात् संसार की सभी वस्तुएँ क्षणभंगुर है। इसप्रकार सभी वस्तुएँ आवश्यक रूप से एक-दूसरे से संबंधित होने के कारण न तो अंतिम रूप से वास्तविक है, और न अवास्तविक ही है। ये सभी वेदान्त की अविद्या तथा माया की तरह प्रतीत होती है, इसलिए बुद्ध ने मध्यम पथ का अनुसरण करने का उपदेश दिया है। बुद्ध ने इस सिद्धान्त को धर्म के साथ identify करते हुए कहा है कि "He who sees the Pratitya-Samutpada sees the dharma, and he who sees dharma sees the Pratitya-Samutpad" अर्थात् बुद्ध का कहना है कि जो प्रतीत्यसमुत्पाद को जाता है। इसलिए इस सिद्धांत को धर्म-चक्र भी कहा गया है। क्योंकि यह सिद्धान्त धर्म का स्थान ग्रहण करता है। "प्रतीत्यसमुत्पाद" को धर्म-चक्र के अतिरिक्त द्वादश-निदान, संसार-चक्र, भव-चक्र, जन्म-मरण चक्र आदि नामों से जाना जाता है। इस सिद्धांत को द्वादश-निदान इसलिए कहा जाता है कि यह दुःख के कारण का पता लगाने के लिए बारह कड़ियों की चर्चा की है। इसे संसार-चक्र

Scanned with CamScanner

इसलिए कहा गया है कि यह सिद्धान्त यह व्याख्या करती है कि मनुष्य का संसार में आवागमन किसप्रकार होता है। इसे जन्म-मरण-चक्र भी कहा जाता है क्योंकि यह सिद्धांत जन्म-मरण चक्र को निश्चित करता है।

प्रतीत्यसमुत्पाद के अनुसार कोई भी घटना बिना कारण के उपस्थित नहीं हो सकती। दुःख एक घटना है जिसे बौद्ध-दर्शन में 'जरामरण' कहा गया है। जरा-मरण का शाब्दिक अर्थ होता है, बुढ़ापा में मृत्यु। फिर भी जरा-मरण संसार के सभी दुःख, रोग, निराशा, शोक आदि का प्रतीक है। जरामरण का कारण जाति है, जन्म ग्रहण करना ही जाति है। अतः जन्म धारण किये बिना दुःख नहीं हो सकता। जाति का क्या कारण है? अर्थात, व्यक्ति क्यों जन्म लेता है? जाति का कारण 'भव' है। जन्म ग्रहण करने की प्रवृति को ही भव कहा जाता है। भव का क्या कारण है? भव का कारण 'उपादान' (Mental ~~Changing~~ clinging) है। सांसारिक वस्तुओं से आसक्त रहने की चाह को 'उपादान' कहा जाता है। इस 'उपादान' की उत्पत्ति क्यों होती है? उपादान का कारण 'तृष्णा' (Craving) है। शब्द, स्पर्श, रंग आदि विषयों को भोगने की इच्छा के कारण उपादान की उत्पत्ति होती है। तृष्णा के कारण ही मनुष्य सांसारिक विषयों के पीछे दौड़ता है। तृष्णा क्यों उत्पन्न होते हैं? तृष्णा का कारण वेदना है। हमारी पहले की सुखद इन्द्रियानुभूति को वेदना कहा जाता है। यह वेदना कहाँ से आती है। वेदना का कारण है स्पर्श (Sense-Contact) इन्द्रियों का वस्तुओं के साथ सम्पर्क को स्पर्श कहा जाता है। स्पर्श का कारण 'षडायतन' (six sense organs) है। पाँच ज्ञान इन्द्रियों और मन के संकलन को 'षडायतन' कहा जाता है। ये छः इन्द्रियाँ ही विषयों के साथ संपर्क ग्रहण करती है। "षडायतन" का कारण नामरूप" (Mind body ~~[illegible]~~ organism) है। मन एवं शरीर के समूह को नामरूप कहा जाता है। 'नामरूप' का कारण विज्ञान या चैतन्य है। विज्ञान का कारण संस्कार (Impression) है। पूर्व जन्म के अंतिम प्रभाव को संस्कार कहते है। अर्थात, अतीत जीवन के कर्मों के प्रभाव से संस्कार निर्मित होता है। संस्कार का कारण अविद्या या ~~संस्कार~~ अज्ञान (Ignorance) है। अविद्या का अर्थ है ज्ञान का अभाव। जो वस्तु अवास्तविक है, उसे वास्तविक समझना, दुखमय को सुखमय और अनात्म को आत्मा समझना ही अज्ञान है। कर्म कारण की श्रृंखला में अविद्या पर आकर रुक जाते है क्योंकि अविद्या ही सभी दुःखों का मूल कारण है। प्रायः भारतीय दर्शन जैसे न्याय, वैशेषिक, सांख्य, शंकर, जैन आदि दुःख का मूल कारण अविद्या को ही ठहराया है।

अब प्रश्न उठता है कि बुद्ध अविद्या पर रुक क्यों जाते है? प्रतीत्यसमुत्पाद के आधार पर वे अविद्या का कारण क्यों नहीं बतलाते इसका कारण यह है कि बुद्ध अविद्या को दुःख का मूल कारण मानते है मूल कारण का कोई कारण नहीं होता। अगर बुद्ध अविद्या का भी कोई कारण बताते तो फिर अविद्या को मूल कारण कैसे कह सकते है।

Scanned with CamScanner

इसप्रकार हम देखते हैं कि दुःख के कारण में बुद्ध ने बारह कड़ियाँ बताया है, जिसमें जरामरण प्रथम कड़ी है और अविद्या अंतिम कड़ी है और शेष कड़ी का स्थान दोनों के मध्य में आता है। इस शृंखला में मात्र बारह ही कड़ियाँ होती हैं, उसका कारण यह है कि बुद्ध कारण का कारण और उस कारण का भी कारण बता देते हैं। इसलिए मूलकारण तक पहुँचते-पहुँचते बारह कड़ियाँ ही होती हैं।

प्रतीत्यसमुत्पाद की सबसे बड़ी विशेषता यह है कि इसमें बारह कड़ियाँ भूत, भविष्य और वर्तमान तीनों कालों के अंतर्गत रख सकते हैं। साथ ही यहाँ दोतरफा प्रस्थान किया जा सकता है। दुःख से प्रस्थान करने पर अविद्या तक पहुँचते हैं और अविद्या से प्रस्थान करके दुःख तक पहुँचते हैं। अर्थात् यहाँ कार्य से कारण की ओर और कारण से कार्य की ओर प्रस्थान किया जा सकता है।

कार्य से कारण की ओर प्रस्थान		कारण से कार्य की ओर प्रस्थान
जरामरण	अतीतकाल से	अविद्या
जाति		संस्कार
भव	वर्तमानकाल	विज्ञान
उपादान		नामरूप
तृष्णा		षडायतन
वेदना		स्पर्श
स्पर्श		वेदना
षडायतन		तृष्णा
नामरूप		उपादान
विज्ञान		भव
संस्कार	भविष्यकाल	जाति
अविद्या		जरामरण

इसप्रकार द्वादश-निदान भूत, वर्तमान एवं भविष्य इन तीनों जीवन में व्याप्त है।

प्रतीत्यसमुत्पाद अनेक विशेषताओं से युक्त होने के बावजूद इसकी अनेक आलोचनाएँ की गई हैं :—

(i) कुछ लोगों का कहना है कि प्रतीत्यसमुत्पाद सिद्धान्त मौलिक नहीं है, बल्कि यह उपनिषद् के 'ब्रह्म-चक्र' की नकल है। क्योंकि ब्रह्म-चक्र में भी दुःखों के कारण पर प्रकाश डाला गया है। अतः इस सिद्धान्त को लेकर बुद्ध मौलिकता का दावा करने में असफल प्रतीत होते हैं।

(ii) प्रतीत्यसमुत्पाद में सर्वप्रथम कर्मवाद की स्थापना होती है। यह सिद्धान्त तीनों जीवन में कार्य कारण के रूप में फैला हुआ है। अर्थात् वर्तमान जीवन अतीत जीवन के कर्मों का फल है। इस सिद्धान्त के अनुसार प्रत्येक वस्तु कारणानुसार होती है।

Scanned with CamScanner

कारण के नष्ट हो जाने पर वस्तु का नाश हो जाता है। तथा उसका परिवर्तन दूसरे रूप में हो जाता है। इसलिए इसे क्षणिक-वाद' भी कहा है। इसप्रकार इस सिद्धान्त के अनुसार नित्य और स्थायी वस्तु भी अनित्य एवं अस्थायी है।

(iii) प्रतीत्यसमुत्पाद का सिद्धान्त बौद्ध दर्शन में 'अनात्मवाद' की स्थापना करने में सहायक होती है। जब विश्व के प्रत्येक वस्तु क्षणिक है, तब चिरस्थायी सत्ता के रूप में आत्मा को मानना भूल है। अतः प्रतीत्यसमुत्पाद सिद्धान्त को बौद्ध-दर्शन का केन्द्र-बिन्दु कहना उचित जान नहीं पड़ता।

अतः उपर्युक्त आलोचनाओं के बावजूद निष्कर्षतः यह कहा जा सकता है, कि प्रतीत्यसमुत्पाद का सिद्धांत बौद्ध दर्शन के आधारशिला के रूप में कार्य करता है। यह अनेक बौद्ध सिद्धान्तों का जन्म देता है।

Scanned with CamScanner